पंचम अध्याय

उपसंहार

अध्याय क्र. ५

उपसंहार

स्वातंत्र्योत्तर काल में जितने भी साहित्यकार हुये उनमें मन्नूजी का नाम एक सफल कथा-साहित्यकार के रूप में लिया जाता है। श्रीमती मन्नू भंडारी सशक्त एंव सफल कथा-साहित्यकार के रूप में हिन्दी साहित्य में जानी जाती है। श्रीमती मन्नू भंडारी ने अपने पच्चीस वर्षों के लेखन में हिन्दी जगत् को पांच कहानी-संग्रह, तीन उपन्यास और एक नाट्य कृति भेंट की है। "क्वालिटी" और "क्वांटिटी" की मात्रा में अगर मन्नूजी का साहित्य तोला जाए तो उनके साहित्य की "क्वांटिटी" अन्य साहित्यकार की तुलना में कम होते हुये भी उसकी "क्वालिटी" अत्यंत उच्च है।

वस्तुत: आलोचना की हमारी वर्तमान वस्तु परक दृष्टि ने लेखन को, महिला लेखक और पुरूष लेखक की श्रेणी मे विभाजित कर दिया है। शायद लिंग आधार ही इस विभाजन के मूल में हैं, अन्यथा इसका कोई औचित्य नहीं जान पड़ता, क्योंकि महिला-लेखिकाएँ भी ~~हीन~~ उसी परिवेश और वातावरण में रहकर लिखती हैं, जिसमें पुरूष लेखक/ महिला-लेखिकाओं ने समस्याएँ भी वे ही उठाई है, जो पुरूष लेखकोंने। अत: उपर्युक्त ढंग से श्रेणी विभाजन कर उस विशिष्ट श्रेणी में उसका मूल्यांकन करना समीचीन नहीं है। फिर भी, यह बात अवश्य है कि महिला लेखन के कारण नारी मन को टोहने का अधिक प्रामाणिक माध्यम, समाज को प्राप्त हुआ है। इस दृष्टि से मन्नूजी के कथा साहित्य की मौलिकता उसकी प्रस्तुति में देखी जा सकती है।

मन्नूजी को अपने पिता से विरासत में भाषा का ज्ञान मिला, साहित्य के प्रति आकर्षण इसी का ही परिणाम है। शिक्षा-दीक्षा का समुचित प्रबंध, देश की स्वाधीनता के लिए जूझने के लिए मिला हुआ अवसर, जाति-पांति के बंधनों को तोड़कर विवाह करने

तथा निभाने का मिला हुआ दुर्लभ सुअवसर और अध्यापन जैसे निरापद पेशे में बने रहने का मौका, ये सारी स्थितियां मन्नूजी से कुछ अधिक रचनाओं की अपेक्षा करने के लिए पाठकों को विवश करती हैं। परंतु लेखिका की रचनागत अल्पता का संबंध उनके उस सामाजिक वर्ग से हैं जिसमें वे रही है। लेखिका का सामाजिक वर्ग स्थूल रूप में मध्यवर्ग है और सूक्ष्म रूप में उच्च मध्य-वर्ग है। मध्यवर्ग का जीवन पीडा एवं संत्रास से भरा हुआ है। इनके सामने अनेकानेक समस्याएँ उत्पन्न होती है प्राय: उन सभी समस्याओं का चित्रण मन्नूजीने अपने साहित्य में किया है।

मन्नूजी के साहित्य ने ही मुझे यह विषय चुनने के लिये विवश किया। मन्नू भंडारी का साहित्य पढ़कर मुझे ऐसा लगा कि इसके मर्म को जानना अत्यंत आवश्यक है। अत: मन्नूजी तथा उनके साहित्य को ही मैंने अपने शोध-प्रबंध का विषय बनाया। इस शोध प्रबंध को हमने पाँच अध्यायों में बाँट दिया है।

दूसरे अध्याय में समस्या क्या है ? समस्या का स्वरूप क्या है ? उसकी परिभाषा तथा साथ ही साथ समस्याओं के कौन-कौन से प्रकार है ? मन्नूजीने अपने कथात्मक साहित्य में किन समस्याओं को प्रमुख रूप से ले लिया हैं आदि बातों का विश्लेषण किया है। इस आधुनिक युग को अगर कोई समस्याओं का युग कहें तो इसमे कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। क्योंकि हर पल हर पग-पग पर मनुष्य को समस्याओं का सामना करना पड़ता है। मन्नूजी न कि सिर्फ एक नारी है बल्कि वह कुछ सालों तक अध्यापिका रह चुकी हैं और प्राध्यापिका हैं। इसी कारण उन्होंने अपने कथात्मक साहित्य में उन्हीं समस्याओं को वर्णित किया हैं जो नारी तथा नारी अध्यापिकाओं और प्राध्यापिकाओं से संबंधित है।

सार रूप में हम यह कह सकते हैं कि, समस्या जीवन के हर पल पर आती रहती हैं। हंस जिस तरह सागर से सिर्फ मोती चुन-चुनकर चुगता है उसी तरह मन्नूजी ने अपनी परिचित समस्या को ही चुन लिया है।

तीसरे अध्याय में मन्नूजी के कथात्मक साहित्य का परिचय दिया है। इसमें पहले मन्नूजी के सार कथा-संग्रह तथा उनमें संकलित कहानियों का संक्षिप्त परिचय देने का प्रयास

किया है। उसके बाद उपन्यासो का संक्षिप्त कथानक दिया है।

१] "मैं हार गई" मन्नूजी का पहला कहानी संग्रह है जो सन् १९५७ में राजकमल प्रकाशन द्वारा प्रकाशित हुआ। इसमें कुल बारह कहानियां संग्रहीत है। -

"ईसा के घर इन्सान" कहानी "मै हार गई कहानी" कहानी संग्रह की पहली कहानी है। इसमें धार्मिक कुप्रवृतियों की ओर संकेत किया गया है।

"गीत का चुम्बन" कहानी आधुनिक युवती के मौन और अव्यक्त प्रेम की कुंठा को प्रस्तुत करती है, जो आधुनिक और प्राचीन परम्पराओं के बीच छटपटा रही है।

"जीती बाजी की हार" तीन सहेलियों की कहानी है। नलिनी, आशा मुरला तीनों सहेलियां आधुनिकता से प्रभावित है। वैवाहिक जीवन तथा विवाहित स्त्रियों के बारें मे चर्चाएँ करती रहती है। तथा विवाहित स्त्रियोंपर तरस खाती है। तीनों सहेलियों में शादी न करने की शर्त लगती है इसमें मुरला शर्त तो जीत जाती है किंतु वस्तुत: उसकी हार ही होती है।

"एक कमजोर लड़की की कहानी" ऐसी भारतीय लड़की की कहानी है, जिसे प्रेम और विवाह दोनो के प्रति ईमानदार रहने की इच्छा दुर्बल सिध्द करती है॥

"सयानी बुआ" अतिअनुशासनमयी प्रवृत्तिवाली स्त्री की [चरित्र-प्रधान] कहानी है।

"अभिनेता" कहानी का शीर्षक है - अभिनेता किंतु यह कथा है एक अभिनेत्री की व्यथा की।

"श्मशान" कहानी में वैवाहिक जीवन मे स्त्री और पुरुष के बीच उत्पन्न होनेवाले आकर्षण की गहराई का व्यंग्यात्मक वर्णन है।

"दीवार बच्चे और बरसात" प्रतिकात्मक कहानी है। साथ ही पारंपारिक

सामाजिक मूल्यों से बंधी नारियों में शिक्षित नारी के संबंध मे कैसी चर्चा होती हैं, इसे भी इस कहानी में चित्रित किया गया है।

"अपने मुंह मिया मिठ्ठू" कहावत चरितार्थ करनेवाले एवं स्वयं को महान साहित्यकार समझनेवाले शास्त्रीजी की चरित्र-प्रधान कहानी "पंडित गजाधर शास्त्री" है।

"कील और कसक" कहानी में लेखिका ने ऐसी नारी को प्रस्तुत किया है जो अपने पति की उपेक्षा के कारण कही और आकर्षित होती हैं, किंतु पराये पुरुष से भी इच्छित योग प्राप्त नही कर पाती, जिसके कारण वह- हताशा से आक्रांत होकर आक्रोश करती है। वेदनाभरी कसक उसके जीवन का अंग बन जाती है।

"दो कलाकार" में लेखिका कहना चाहती है कि कोरी प्रशंसा की अपेक्षा ठोस कर्म महत्वपूर्ण है।

"मैं हार गई" वर्तमान राजनीति पर जबरदस्त व्यंग्य कसा है।

२] "तीन निगाहों की एक तस्वीर " सन् १९५९ में प्रकाशित कहानी संग्रह में आठ कहानियाँ संकलीत है -

"तीन निगाहों की एक तस्वीर" एक ऐसी नारी की कहानी है, जो दीर्घ समय से बीमार अपने पति की सेवा करके साधवी तो बनी रह सकती है, परंतु यौन-बुभुक्षा के लिए उसे परपुरुष पर आश्रित होना पड़ता है।

"अकेली" परित्यक्ता वृध्दा नारी का अत्यंत मार्मीक चित्रण है।

"अनाथाही गहराइयाँ" एक ऐसे दरिद्र, किन्तु ज्ञानपिपासु लड़के की कहानी है, जिसे मुफ्त में पढ़ानेवाली शिक्षिका से असीम लगाव है, जो मिथ्याभ्रम वश उसकी आत्महत्या का कारण बनती है।

"खोटे सिक्के" कहानी टकसाल में काम करनेवाले मजदूरों के शोषण की कहानी हैं।

"घुटन" कहानी में दो स्थितियो में जीनेवाली दो नारियों की घुटन है।

"हार" राजनीतिक कहानी है।

"मजबूरी" कहानी भी "अकेली" कहानी की भाँति वृध्दा नारी के मातृत्व मोह का चित्रण करती है।

अतीत से उत्पन्न समस्या को "चश्मे" कहानी में चित्रित किया है।

३] "यही सच है" सन् १९६६ में यह कहानी-संग्रह प्रकाशित हुआ। इस में कुल आठ कहानियाँ संग्रहीत हैं -

"क्षय" कहानी नारी मन के कुंठा को व्यक्त करती है।

प्रस्तुत कहानी "तीसरा आदमी" में नारी-पुरुष के परंपरागत स्थूल संबंधो की सूक्ष्म प्रक्रिया वर्णित है। साथ साथ प्राचीन और नवीन मूल्यों की टकराहट है।

न्याय व्यवस्था में होनेवाले विलंब से किस तरह परिवार टूट जाते हैं इसका चित्रण "सजा" कहानी में हुआ है।

"नकली हीरे" अभिजात्य वर्ग की एक पत्नी की कहानी है।

"नशा" एक अलग ही ढंग की कहानी है। "इन्कम टैक्स और नींद" कहानी ग्राम्य और शहरी संस्कृति के भेद के साथ दो पीढ़ियों के अंतर को भी स्पष्ट करती है।

"रानी मां का चबूतरा" निम्न वर्ग की नारी की कहानी है। किशोरावस्था एवं युवावस्था में किए जानेवाले प्रेम के व्दंव्द का मनोविश्लेषक चित्रण "यही सच है" कहानी में हुआ है।

४] "एक प्लेट सैलाब" मन्नूजी का यह चतुर्थ कहानी संग्रह सन् १९६८ में प्रकाशित हुआ। इसमें कुल ९ कहानियाँ संग्रहीत है -

"नई नौकरी" कहानी आर्थिक समस्या के कारण चित्रित नारी के घुटन को चित्रित किया है।

"बन्द दराजों के साथ" कहानी में विवाह के उपरांत पहला प्रेमी मिलने के कारण उत्पन्न मानसिक व्दंव्द को दिखलाया है।

"एक प्लेट सैलाब" मे एक भीड़ भरे ही हाऊस में भिन्न भिन्न मानसिकताओं मे उलझे हुए लोगों के समूह का वर्णन है।

अतिरिक्त नियमों और संस्कारों में बंधे हुए, भविष्य के प्रति निश्चित एक परिवार की कहानी "छत बनाने वाले" शीर्षक कहानी है।

"एक बार और" कहानी में नारी जीवन में होनेवाले पहले प्रेम महत्व को चित्रित किया है।

"संख्या के पार" एक युवती की कहानी है।

"बाहों का घेरा" नारी के मनोभाव एवं घुटन को चित्रित किया है।

"कमरे, कमरा और कमरे" नारी के सीतिम-असीमित व्यक्तित्व को चित्रित करनेवाली कहानी है।

"ऊँचाई" कहानी में नारी-पुरुष संबंधो के स्थापित मूल्य और नये जीवन-मूल्यों के बीच सीधा टकराव है।

५] "त्रिशंकु" मन्नूजी का यह अंतिम कहानी संग्रह है, जो सन् १९७८ में प्रकाशित हुआ। इसमें भी कुल नौ कहानियाँ संग्रहीत हैं -

"आते-जाते यायावर" पुरुष की यायावरी वृत्ति की ओर संकेत करनेवाली कहानी है।

"दरार भरने की दरार" कहानी मनुष्य की सूक्ष्म मनोवृत्ति पर प्रकाश डालनेवाली कहानी है।

"स्त्री सुबोधिनी" आत्मकथात्मक ढंग से लिखी हुई कहानी है। विवाहित पुरुष के व्दारा छली गयी नारी का चित्रण किया है।

आर्थिक कमजोरी के कारण घर से बाहर रहनेवाला पुरुष अपने ही घर में बेगाना होता है इसका चित्रण "शायद" कहानी के राखाल के माध्यम से किया है।

"त्रिशंकु" कहानी में मां और बेटी के दृष्टिकोणोंसे दो पीढ़ियो के अन्तर को स्पष्ट किया है।

"रेत की दीवार" कहानी बेरोजगारी`ककारण आज के सुशिक्षित युवा मानस की कुंठा और निराशा को उध्दृत करती है।

"अलगाव" राजनीतिक कहानी है।

"एखाने आकाश नाई" कहानी में संयुक्त परिवार में उत्पन्न समस्या को चित्रित किया है।

मन्नूजी की उपर्युक्त कहानी-संग्रह पढने के बाद ऐसा लगता है कि हर एक कहानी सशक्त एवं प्रभावशाली है।

मन्नूजी के कहानी-संग्रहों के समान उपन्यास भी उँचे दर्जे के सिद्ध हुये हैं।

१] "एक इंच मुस्कान" ---------- मन्नूजी तथा उनके पति राजेंन्द्र यादव - दोनों ने मिलकर लिखा हुआ [सहयोगी] यह उपन्यास है। इस उपन्यास के प्रमुख पुरुष पात्र अमर को श्री यादव ने संभाला है और स्त्री पात्रो - रंजना और अमला - को मन्नूजी ने। इसमें वैवाहिक समस्या को चित्रित किया है। साथ साथ सामाजिक समस्या को चित्रित किया है।

२] "आपका बंटी"
---------- "आपका बंटी" मन्नूजी का दूसरा उपन्यास है, जिसका प्रकाशन १९७१ में हुआ। "एक इंच मुस्कान" की तरह "आपका बंटी" यह उपन्यास भी सामाजिक उपन्यास है। इसमें मन्नू भंडारीने मनोविज्ञान के साथ-साथ बाल मनोविज्ञान को भी बहुत ही सूक्ष्मता से चित्रीत किया है।

३] "महाभोज"
------ इस उपन्यास का प्रकाशन् सन् १९७९ में हुआ है। इसमें मन्नूजी ने राजनीतिक समस्या पर प्रकाश डाला है।

४] "स्वामी"
----- इस उपन्यास में मन्नूजी ने नारी समस्या के साथ साथ पारंपारिक सामाजिक रुढ़ियाँ तथा संयुक्त परिवार से उत्पन्न समस्याओं को भी चित्रित किया है।

सारांश रूप में यह कहा जा सकता है कि मन्नूजी के कथा-साहित्य की भाषा सरल एवं मुहावरेंदार है। उन्होंने अपने कथा-साहित्य में युग-जीवन का वास्तव चित्र खींचा है।

चतुर्थ अध्याय में मन्नूजी के कथा साहित्य में चित्रित विभिन्न समस्याओं को लिया है। उन्होंने पारिवारिक समस्याएँ, बाल-मनोवैज्ञानिक समस्याएँ, घुटन और अकेलेपन की समस्याएँ, यौन समस्याएँ, शिक्षित नारी की समस्या, वैवाहिक समस्याएँ, राजनीतिक समस्याएँ, आर्थिक समस्याएँ, तथा सामाजिक समस्याएँ आदि समस्याओं का चित्रण किया है।

इन समस्याओं को देखने के बाद स्पष्ट रूप में यह कह सकते है कि श्रीमती मन्नू भंडारी - मानव जीवन के विविध धरातलों से विभिन्न समस्याएँ चुनकर अपने साहित्य में संपूर्ण सजगता के साथ प्रस्तुत करने में प्रभावशाली रूप से सफल रही है।

सार रूप में हम यह कह सकते है कि, मन्नूजी कि रचनाओं की विशिष्टता है - उनके प्रामाणिक अनुभव। मन्नूजी ने ऐसे जीवन-सत्य को अपने समाज और परिवेश से प्राप्त किया है, जो किसी न किसी कोण से मानवीय हित-अहित से जुड़ा हुआ है और इसी अनुभूत सत्य को उन्होंने एक नविन और स्वस्थ दृष्टिकोण से सर्जित किया है। यहीं कारण है कि उनकी रचनाओं में जीवन के यथावत विस्तार के साथ ही संवेदनाओं का प्रसार भी है।

मन्नूजी के व्यक्तित्व के समान ही उनका समग्र कथा-साहित्य भी उनके सीधे-सादे और सच्चे व्यक्तित्व को प्रतिबिम्बित करनेवाला है। उसमें झांकनेवाले पाठक वर्ग को अपनी अनुभूतियों की प्रतिछाया जब उसमें दिखाई देती है तो पाठक भाव विभोर हो जाता है। यही कारण है कि मन्नूजी अपने प्रारंभिक लेखनकाल से लेकर आजतक बराबर सम्मानित और समादृत बनी रहीं हैं।

:::::::::::